बैंगन उत्पादन

बैंगन हिमाचल प्रदेश में निचले तथा मध्य क्षेत्रों की उपयुक्त फसल है। हिमाचल प्रदेश में बैंगन के अन्तर्गत लगभग 903 हैक्टेयर क्षेत्रफल है जिससे प्रतिवर्ष 17564 टन बैंगन का उत्पादन होता है।

उन्नत किस्म –

- अर्का केशव –जीवाणु मुरझाण रोग प्रतिरोधी। उपज 160 से 200 क्विंटल प्रति है.।
- अर्का निधि –जीवाणु मुरझाण रोग प्रतिरोधी। उपज 300 क्विंटल प्रति है.।
- हिसार श्यामल –जीवाणु मुरझाण रोग प्रतिरोधी। उपज 250 क्विंटल प्रति है.।
- पूसा परपल कलस्टर, –जीवाणु मुरझाण रोग प्रतिरोधी। उपज 100 से 125 क्विंटल प्रति है.।
- पूसा क्रांति –जीवाणु मुरझाण ग्रसित क्षेत्रों में न लगायें। उपज 200 क्विंटल प्रति है.।
- पूसा परपल लौंग –जीवाणु मुरझाण ग्रसित क्षेत्रों में न लगायें। उपज 250 क्विंटल प्रति है.।
- पूसा अनुपम, –सड़न प्रतिरोधी किस्म है। उपज 480 क्विंटल प्रति है.।
- टी–3 –निचले क्षेत्र के लिए उपयोगी। उपज 440 क्विंटल प्रति है.।
- इसके अलावा यहां प्राइवेट सेक्टर की किस्म नवकरण यहां काफी मशहूर है।

बीजाई एवं रोपाई – बैंगन की पहले नर्सरी तैयार कर बाद में रोपाई की जाती है।

नर्सरी का समय	–	अक्टूबर – नबम्वर	फरवरी – मार्च
पौध रोपण का समय	–	फरवरी से अप्रैल	अप्रैल से जूलाई

पौध रोपण ग्रीष्म ऋतु में समतल खेत में तथा बरसात में मेढ. के उपर करें। पौधरोपण के तुरन्त बाद हल्की सिंचाई करें या प्रत्येक पौधे को फुहारे से पानी दें। रासायनिक खरपतबार नियन्त्रण के अभाब में पौधरोपण के लगभग 15 से 20 दिन बाद हल्की निराई गुड़ाई करें। समान्यतः प्रत्येक सिंचाई के बाद हल्की गुड़ाई करना आवश्यक है ताकि भूमि को भुरभुरा एवं खरपतबार रहित रखा जाए।

सिंचाई–

नर्सरी उत्पादन में बीजाई के बाद प्रारम्भ में सुबह शाम फुहारे से हल्की सिंचाई करें, अकुरण के बाद एक समय सिंचाई करें। पौध रोपण के बाद गर्मियों में सिंचाई 5 से 7 दिन के अनतराल पर तथा अन्य समय में 12 से 15 दिन बाद या जरूरत अनुसार सिंचाई करें।

बीज की मात्रा

बैंगन का बीज 500–600 ग्राम प्रति हैक्टेयर

खाद / उर्वरक एवं खरपतबार नियंत्रण

गोबर खाद – 100 क्विंटल प्रति है.
यूरिया उर्वरक – 217 किलो प्रति है.
सुपरफॉस्फेट उर्वरक – 375 किलो प्रति है.
म्यूरेट आफ पोटाश उर्वरक – 83 किलो प्रति है.
लासो या स्टॉम्प खरपतवारनाशी – 4 लीटर प्रति है.

गोबर की गली सड़ी खाद हल चलाने से पहले खेत में डाल दें तथा 2 बार हल चलाकर खेत अच्छी तरह तैयार कर लें। 4 लीटर स्टॉम्प या लासो खरपतबारनाशक में से किसी एक को प्र्याप्त पानी में घोलकर पौध रोपण से 24 से 48 घंटा पहले छिड.काव करें। यूरिया उर्वरक की आधी मात्रा व सुपर फासफेट तथा म्यूरेट ऑफ पोटाश की सारी मात्रा पौध रोपण से पहले रसायनिक खादों को अच्छी तरह मिटटी में मिला दें। शेष यूरिया उर्वरक को दो बरावर भागों में बांटकर 1 महीने के अंतराल पर प्रयोग करें।

तुडाई

जव फलों का रंग तथा आकार अच्छा हो तीाी इनकी तुड़ाई करें। इस बात का विशेष ध्यान रखें कि तुड़ाई के समय फल चमकीले एवं आकर्षक हों। मौसम एवं किस्म के अनुसार 3 से 5 दिन के अन्तराल पर तुड़ाई करें।

उपज

बैंगन के उत्पादन पर किस्म के चयन के अलावा सस्य क्रिया का भी प्रभाव पड़ता है।

बीमारी

- **कमरतोड़** –पौध बीज से निकलते समय तथा बाद में भूमि पर गिर कर मर जाते हैं।
  उपचार – नर्सरी क्यारी को फार्मलीन से शोधित कर बीजाई करें। बीज अंकुरण बाद इंडोफिल एम–45 + कार्बेन्डाजिम दोनों की 25 तथा 10 ग्राम मात्रा 10 लीटर पानी में घोलकर ड्रैन्चिग करें।
- **फाइटोपथोरा फल सड़न** – फल अग्रीम भाग से सड़ने शुरू होते हैं।
  उपचार – रिडोमिल एम जैड की 25 ग्राम मात्रा 10 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।
- **फोमोप्सिस सड़न व ब्लाईट** – पत्तों पर भूरे रंग के धब्बे बन जाते हैं। फलों पर सड़न के लक्षण आ जाते हैं।
  उपचार – 3 ग्राम थीरम प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करें। फसल पर कार्बैंन्डाजिम + मैनकोजेब एम –45 का फूल आने पर 15 दिन के अन्तराल पर तीन बाद छिड़काव करें। तीन साल का फसल चक्र अपनाये।
- **तना एवं फल छेदक** – सुण्डियां तने में घुसकर उसे अन्दर से खुरच डालती है और अन्दर की कोशिकाओं को नष्ट कर देती है, पौधा सूख जाता है। जब इनका आक्रमण टहनियों पर होता है तो यह सूख कर गिर जाती है। बन रहे फलों में सुंण्डियां बाहय दल पुंजों द्वारा घुस जाती है, पर बाहरी निशान नहीं छोड़ती । सुण्डियों के बाहर निकलने पर फलों पर बडे–वडे छेद हो जाती हैं।
  उपचार – पत्तों पर जैसे ही कीट का आक्रमण हो वैसे ही कार्बरिल – सेविन 1.5 किलोग्राम या फैनबलरेट – सुमिसिडीन/एग्रोफैन 375 मिलीलीटर को 750 लीटर पानी में घोलकर प्रति हैक्टेयर छिड़कें। यदि प्रकोप बना रहे तो 15 दिन के अन्तराल पर यही छिड़काव करें।
- **हडडा बीटल** – इसके शिशु एवं प्रौढ़ पत्तियों के बीच से हरे पदार्थ खा जाते हैं और गिर जाते हैं।
  उपचार – कार्बरिल – सेविन 1.5 किलोग्राम 750 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।
- **जैसिड व माइटस** – जैसिड पत्तियों की निचली सतह से कोशिका का रस चूसते हैं। पत्ते उपर की ओर मुड़ कर सुख जाते हैं। माईट के कारण पत्तों पर सफेद चकते बनते हैं एवं पौधें की वृद्धि प्रभवित होती है।
  उपचार – मैलाथियॉन 750 मिलीलीटर/750 लीटर पानी में प्रति हैक्टेयर में कीट का प्रकोप होते ही छिड़काव करें।
- **सूत्रकृमि** – यह सूक्ष्मदर्शी जीव पौधें की जड़ों पर पलते हैं जिससे जड़ें मोटी और गांठ वाली हो जाती है। पौधे के उपरी भाग पीले पड़ने लगते हैं व पौधे की वृद्धि रूक जाती है। इसका संक्रमण खेतों में कहीं कहीं होता है। जहां इसका अधिक प्रकोप हो वहां पौधों पर पानी की कमी के लक्षण जैसे पत्तियों का मुड़ना तथा दिन में अस्थाई रूप से पौधे का मुरझाना दिखाई देता है।
  उपचार – प्रभावित भूमि में बैंगन अथवा मिर्च टमाटर न बोयें। सब्जियों के साथ अन्न की फसल को फसल चक्र में शामिल करें। हमेशा सुत्रकृमि रहित पौधशाला से बिना गांठ वाली जड़ों के पौधे लगायें।